

न घर के रहेंगे न घाट के



“मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य है ।, जीवन मिट्टी से मिट्टी तक की यात्रा है ।, अर्थी से पहले जीवन का अर्थ जान ले ।“ ये बोध वाक्य हर बार उस समय याद आते हैं जब हम किसी को श्मशान में छोड़ने जाते हैं और शोकसभा के कक्ष की दीवारों पर अपनी दृष्टि डालते हैं, जहाँ पर कुछ अटल सत्य बातें हमारे हृदय को परिवर्तित करने के उद्देश्य से लिखी रहती हैं । हम श्मशान में जाते हैं, कई लोगों को राख होते देखते हैं । लेकिन हम अपना मनोबल हमेशा मजबूत रखते हैं कि हम तो दृष्टा है कर्ता नहीं । करता को वो ऊपर वाला है । हम सब उसके हाथों की कटपुतली हैं ।

कुल मिला कर बात यह है कि हमें न तो इन अटल सत्य वाक्यों से कोई पिघला सकता है और न ही हमारे संसार के प्रति स्थापित मनोबल को कोई गिरा सकता है । हम जब श्मशान में अपनी और से पंच लकड़ी दे कर घर की तरफ प्रस्थान करते हैं तो सारे उपदेश और सत्य चर्चा वहीं छोड़ कर स्कूटर से घर की तरफ भाग लेते हैं, वह भी इतनी स्पीड में कि कोई हमको पकड़ कर दीवारों पर लिखा सारा ज्ञान हमारे हृदय में उढ़लने न लग जाए ।

वैसे हम कोई मूर्ख थोड़े ही हैं जो एक दो लाईन पढ़कर और कुछ देर श्मशान में बैठ कर वैरागी हो जाए । श्मशानिया वैराग्य हमें भी होता है पर जैसे ही याद आता है, हमारा भी घर है, परिवार है, प्यार करने वाली एक बीबी है, बच्चें हैं । उनका बेचारों का क्या होगा ? हमारी अंतर आत्मा बोल उठती है- सत्य चर्चा के लायक होता है, सत्य पर चलने वीरों का काम है । घर गृहस्थी को तो सब करना पड़ता है ।

श्मशान में जाओ तो ऐसे निर्लिप्त होकर जाओ, जैसे कोई पिक्चर देखने जाते हैं । तरह- तरह के सीन देखते हैं और जब विलेन हीरो को मार रहा होता है तो पॉपकार्न और शीतल पेय हमारे हाथों में ही स्थिर हो जाता है, नजरें एकटक बड़े परदे पर स्थिर हो जाती हैं और अंदर से हम ऐसे कसमसाते हैं कि हम होते तो विलेन को हाथों हाथ निपटा देते, लेकिन कर नहीं सकते क्योंकि हम दृष्टा है, कर्ता नहीं । थोड़ी देर बाद हीरो पॉवर में आता है और विलेन को निपटाने लगता है, हमारे पॉप कार्न खाने की स्पीड भी बड़ जाती है । जितना विलेन ने हीरो को मारा उससे ज्यादा हीरो उसको मारता है , मार मार के अधमरा कर देता है, पुलिस एक दम टाईम पे आ जाती है और विलेन को गिरफ्तार कर ले जाती है । पिक्चर खत्म होते ही हम सम्मोहन से बाहर आ जाते हैं और जल्दी से बाहर निकल स्कूटर से घर की ओर दौड़ पड़ते हैं । कल सबेरे उठ कर दूसरे काम निपटाने हैं । हीरो विलेन का तो काम ही यही है, अपन कोई पिक्चर का हिस्सा थोड़ी है जो फिल्मी स्टार्डिट में जिए ।

फिल्म देखो फिल्म का ज्ञान मत लो, श्मशान में जाओ कोई निपट रहा है तो कुछ देर मन को दृवित करो, सब कुछ होने के बाद संसार धर्म को निभाने के लिए निकल पड़ो वरना जी नहीं पाओगे ,यही सच्चा ज्ञान है जो कि संसार की असारता बोध करवाने में बचपन से बुढ़ापे तक इंसान को साथ देता है,एक ही विचार पर स्थिर रखता है ।

उपदेशक वाक्य और चर्चाएँ विचारों के छोटे गमलों में ही पनपने चाहिए, इनके लिए यदी लंबे चोड़े हृदय की जमीन दे दी घर परिवार के लिए मुश्किले खड़ी होना तय है । आज फिल्म देखकर, कल श्मशान से आकर, परसो किसी प्रवचन से लौट कर हम परिवर्तित होने लगे तो न घर के रहेंगे न घाट के ।

-संदीप सृजन

संपादक-शाश्वत सृजन

ए-99 वी.डी. मार्केट, उज्जैन 456006

मो. 9406649733

मेल- shashwatsrijan111@gmail.com